हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा और
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान;
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर के संयुक्त तत्वावधान में
आयोजित त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
विषय

'भारतीय समाज, शिक्षा और साहित्य में गांधी' विषय पर

(20-22 फरवरी, 2019)

संगोष्ठी का प्रतिवेदन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शतकोत्तर स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा और भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान; गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय समाज, शिक्षा और साहित्य में गांधी' विषयक त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर में किया गया। बुधवार, 20 फरवरी को उद्घाटन सत्र में गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के **कुलपति प्रो. एस.ए. बारी** और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के **कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र** के साथ मुख्य अतिथि के रूप में राज्यसभा के **उपसभापति श्री हरिवंश** तथा विशेष अतिथि के तौर पर **प्रो. लक्ष्मी बंदलामुडी** सिटी यूनिवर्सिटी न्यूयॉर्क (न्यूयॉर्क) और वरिष्ठ कथाकार **श्री रामदेव धुरंधर** (मॉरीशस) भी उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र के आरम्भ में संगोष्ठी के संयोजक **प्रो. संजीव कुमार दुबे** (गु.के.वि.वि.) ने प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम समग्रता से देखने, विचार करने तथा समावेशी होने की भावना से कार्य करते हैं। यही कारण है की इस संगोष्ठी में भारतीय समाज और शिक्षा के साथ साहित्य में गांधी के जीवन और विचारों की उपस्थिति और गति पर विचार किया जाएगा। इस क्रम में न सिर्फ हिन्दी साहित्य अपितु भारतीय भाषाओं, विशेषकर गुजरती, मराठी, उर्दू और हिन्दी के साथ फारसी और अंग्रेजी के सुधी समीक्षकों, आलोचकों को भी आमंत्रित करने का प्रयास किया गया है। आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए भाषा,साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान के डीन **प्रो. अतनु भट्टाचार्य (गु.के.वि.वि.)** ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। विशेष अतिथि प्रो. लक्ष्मी बंदलामुडी ने वैश्वीकृत दुनिया में रहने के संकट पर विचार व्यक्त किया। वैश्विक परिवेश में 'आइडेंटिटी पॉलिटिक्स' (पहचान की राजनीति) को एक बड़ी चुनौती के रूप में माना और कहा कि दुनिया में कई संस्कृतियाँ हैं और सांस्कृतिक वैविध्य से संघर्ष और टकराहट की स्थिति बनी है। वर्त्तमान समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने गांधी जी के विचारों को वैश्विक दुनिया के लिए प्रासंगिक बताया। विशेष अतिथि **प्रो. मनोज कुमार** (म.गां.अं.हिं.वि.वि.) ने कहा कि हम गांधी को आज क्यों याद करना चाहते हैं ? क्या उन सवालों के उत्तर

गांधी के पास है जिनके उत्तर हम ढूँढना चाहते हैं ! इस क्रम में उन्होंने भाषा, साहित्य से लेकर मध्यमवर्ग, उच्चवर्ग, निम्नवर्ग, आमजन, गाँव आदि से जुड़े कई प्रश्न उठाते हुए कहा कि इन्हीं के उत्तर ढूंढने के क्रम में हम यहाँ बैठे हैं, यदि एक भी उत्तर हम ढूंढ पाएँ तो यह संगोष्ठी की सफलता होगी। गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव **प्रो. आलोक गुप्त** ने राजनीति और साहित्य के केंद्र में गांधी जी की स्वीकार्यता और अस्वीकार्यता पर अपने विचार व्यक्त किये। विशेष अतिथि श्री रामदेव धुरंधर (मॉरीशस) ने अतीत को याद करते हुए कहा कि गांधी जी ने1901 में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के दौरान जहाज में खराबी आ जाने के कारण मॉरीशस में कुछ दिन बिताये थे। उन्होंने गांधी जी द्वारा मॉरीशसवासियों को दिये गये शिक्षा और एकजुटता के संदेश का स्मरण किया। संगोष्ठी का उद्घाटन वक्तव्य देते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने कहा कि वर्धा और अहमदाबाद ऐसे स्थल हैं जिससे बापू का बड़ा निकट का सम्बन्ध रहा है। इन जगहों से एक प्रकार की क्रांति की ज्वाला शुरू हुई। सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र में अद्भुत प्रयोग हुए जो व्यापक बदलाव के आधार बने। उन्होंने कहा कि जिस दृढता और संकल्प शक्ति के साथ बापू कोई विचार सामने लाते थे, उसे व्यव्हार में भी उतारते थे। यह आकस्मिक नहीं है कि अपने जीवन की कथा को वे सत्य का प्रयोग कहते हैं। वो सत्य को पूजने, उससे टकराने की निरंतर चेष्टा करते रहते थे। और तो और उनकी भाषा, लिखावट और बोलना देखें तो आप ऐसा अनुभव करेंगे कि एक ऐसा व्यक्ति बोल रहा है जिसके सामने सारी सृष्टि है, सभी मनुष्य है। वह किसी एक ओर से नहीं बोलता। वह अंग्रेजों की बात करते हैं तो उसके दोषों को दिखाते हैं, परन्तु उसके मनुष्यता के अंश को भी वह स्वीकारते हैं। ये बहुत बड़े मनुष्य की क्षमता थी जो उन्होंने स्वयं अर्जित की थी। आगे उन्होंने चरित्र निर्माण, अर्थ की प्रधानता पर कटु आलोचना, परिवार के रिश्ते, न्याय व्यवस्था, बाज़ार के अधिपत्य, समाज व्यवस्था, श्रमजीवी और बुद्धिजीवी के अंतर को कम करने के संदर्भ में गांधी जी के विचरों की चर्चा की। गांधी शांति प्रतिष्ठान के **श्री कुमार प्रशांत** ने बीज वक्तव्य देते हुए गांधी जी से जुड़ी कई ऐतिहासिक घटनाओं की चर्चा की जिसमें गांधी जी के मॉरीशस रुकने, प्रत्येक गाँव में मंदिर निर्माण के लिए प्रेरित करने से लेकर जुलू विद्रोह में गांधी की सहभागिता को याद करते हुए संवाद की महत्ता को भी रेखांकित किया, जो आज के लिए महत्त्वपूर्ण है। मुख्य अतिथि **श्री हरिवंश** जी ने कहा कि दुनिया को बदलने का कार्य विचार करता है और गांधी जी विचारकों में ऐसे अंतिम व्यक्ति हैं जिनके विचारों ने दुनिया को इतनी गहराई से प्रभावित किया। दुनिया में बढ़ते शस्त्रीकरण और पर्यावरण पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि लोगों को और खासकर छात्रों को यह समझाना चाहिए कि आज हम दुनिया को बचाना चाहते हैं, जिन्दा रहना चाहते हैं, तो गांधी के अलावा और कोई दूसरा विकल्प नहीं है। सत्र के अध्यक्ष गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. एस.ए. बारी** ने अध्यक्षीय वक्तव्य में महात्मा गाँधी के सत्य, अहिंसा और निर्भयता को मानवीय नैतिकता के उच्चादर्श के रूप में रेखांकित करते हुए कहा कि मोहन दास से महात्मा की यात्रा को देखते हुए हम अपनी नैतिक और आत्मिक उन्नति की राह को तलाश सकते हैं। उद्घाटन सत्र का कुशल संचालन गु.के.वि.वि. के शोधार्थी **पुष्पेन्द्र कुमार** ने तथा आभार **प्रो. अवधेश कुमार**(म.गां.अं.हिं.वि.वि.) ने प्रकट किया।

तीन दिनों की इस संगोष्ठी में उद्घाटन सत्र एवं समापन सत्र के अतिरिक्त चार मुख्य सत्र तथा प्रपत्र प्रस्तुति हेतु छह समानांतर सत्र प्राध्यापकों, शोधार्थियों/विद्यार्थियों के लिए नियोजित थे। पहले दिन के प्रथम मुख्य सत्र का विषय था, 'भारतीय शिक्षा और गांधी'। जिसकी अध्यक्षता म.गां.अं.हिं.वि.वि. के **कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने की तथा वक्ता के रूप में गांधी ग्रामीण विश्वविद्यालय, दिंडीगुल के पूर्व कुलपति **प्रो. टी. करुणाकरण** तथा टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान से जुड़े **प्रो. संजीव राय** उपस्थित थे।

प्रथम वक्ता के रूप में प्रो. संजीव राय ने शिक्षा पर बात रखते हुए गांधी जी द्वारा किए गए वस्त्र त्याग यानी उनके भोग से त्याग की यात्रा की बात को रेखांकित करते हुए कहा कि हमें उनसे प्रेरणा लेने की जरूरत है। दूसरे वक्ता प्रो. टी. करुनाकरण ने गांधी जी की 'नई तालीम' से जुड़े विचारों को व्यक्त किया। साथ ही ग्रामीण शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा पर जोर देने की बात की और कहा कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है स्वयं को जानना ।सत्र की अध्यक्षता कर रहे म.गां.अं.हिं.वि.वि. के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया तथा गांधी जी के विचारों में सर्वोदय, परोपकार (परहित) तथा लोभ से मुक्ति की बात की। साथ ही उन्होंने वर्तमान में सरकारी शिक्षण संस्थानों में शिक्षा के बिगड़ते हालात और शिक्षकों की कमी पर गहरी चिंता व्यक्त की। सत्र का संचालन गु.के.वि.वि. की शोधार्थी **पूर्णिमा** तथा आभार **सुमित कुमार** ने प्रकट किया।

संगोष्ठी के पहले दिन प्रपत्र प्रस्तुतियों के लिए नियोजित समानांतर सत्रों में प्राध्यापकों ने प्रपत्र प्रस्तुत किए। प्रथम समानांतर सत्र 'शिक्षा और गांधी' की अध्यक्षता **प्रो. बालाजी रंगनाथन** (गु.के.वि.वि.) ने की तथा **डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र, डॉ. धूपनाथ प्रसाद, श्री समरजीत यादव**, और **श्री धर्मेन्द्र शंभरकर** (म.गां.अं.हिं.वि.वि.) ने प्रपत्र प्रस्तुत किये। सत्रका संचालन **भरत** और आभार **अनु शर्मा** (गु.के.वि.वि.) ने माना। दूसरे समानांतर सत्र 'समाज और गांधी' की अध्यक्षता **प्रो. संजय कुमार झा** (गु.के.वि.वि.) ने की। **डॉ. कृष्णचंद्र पाण्डेय, डॉ. मिथलेश कुमार, डॉ. गजेन्द्र कुमार मीणा, डॉ. धनंजय राय** और **प्रा. प्रशांत कौशिक** ने प्रपत्र प्रस्तुत किये एवं संचालन **सतीश पांडे** और आभार **कविता रानी** ने माना। तीसरे समानांतर सत्र 'साहित्य में गांधी' की अध्यक्षता **प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी** ने की। प्रपत्र प्रस्तुतकर्ता के रूप में **डॉ. मनोज कुमार राय,डॉ. राकेश मिश्र, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. श्याम सुंदर पाण्डेय** और **डॉ. किंगसन सिंह पटेल** ने अपने विचार प्रकट किये। सत्र का संचालन- **राहुल प्रसाद** और आभार **सपना दास** ने माना।

दूसरे दिन, मुख्य सत्र यानी द्वितीय सत्र 'भारतीय साहित्य में गांधी'विषय पर था। जिसमें गुजराती साहित्यकार **डॉ. बिंदु भट्ट की** अध्यक्षता में **डॉ. अरुणा जडेजा** (मराठी),**डॉ. निसार अंसारी** (उर्दू-फारसी),**श्री गुलाम फरीद शेख** (उर्दू) और **डॉ. भरत मेहता** (गुजराती) ने वक्तव्य दिये।सत्र की प्रथम वक्ता अरुणा जडेजा ने गांधी जी को एक निष्ठा पुरुष बताते हुए सम्पूर्ण मराठी साहित्य पर गांधी जी के विचारों के प्रभाव को व्यक्त किया, साथ ही उन्होंने कई मराठी रचनाओं के उद्धरणों को भी प्रस्तुत किया।दूसरे वक्ता डॉ. मेहता ने विभिन्न गुजरती साहित्य पर अपनी बात रखी, साथ ही उपन्यासों से ऐतिहासिक संदर्भों को उद्धृत कर गांधी जी के विचारों के प्रभावों को बताया। तीसरे वक्ता डॉ. निसार अंसारी ने गांधी जी के भाषा संबंधी चिंतन को रेखांकित करते हुए उर्दू और हिन्दी के मिश्रित रूप 'हिन्दुस्तानी' जुबान की महत्ता को बताया। चौथे वक्ता श्री गुलाम फरीद शेख ने उर्दू नज़्मों (कविता) पर बात करते हुए कई उद्धरण प्रस्तुत किए, जिसमें गांधी जी की चर्चा या उनके विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।सत्र की अध्यक्षता कर रही डॉ. बिंदु भट्ट ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया और कहा कि गांधी हमारे देश के लोगों में उम्मीद जगाने वाले एक अद्वितीय पुरुष थे। वर्त्तमान में देश में नृशंस हत्या के माहौल को केंद्र में रखते हुए उन्होंने कहा कि मुझे लगता है गांधी जी ने जो आज़ादी हमें दिलाई हम उसके लायक नहीं थे। आगे उन्होंने 'गुजरती साहित्य से गांधी का क्या रिश्ता है ?' विषय पर अपने विस्तृत विचार व्यक्त किए। अंत में उन्होंने गांधी जी के ही एक विचार से अपनी बात ख़त्म की, "सारी दिशाओं में खिड़कियाँ खुली रखिए पर मकान तो अपनी जमीन पर होना

चाहिए ।" सत्र का संचालनगु.के.वि.वि. के शोधार्थी **ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह** एवं आभार **शिवानंद सिंह** ने ज्ञापित किया।

तृतीय मुख्य सत्र का विषय था, 'भारतीय समाज और गांधी' जिसकी अध्यक्षता **प्रो. मनोज कुमार** (म.गां.अं.हिं.वि.वि.) ने की तथा वक्ता के रूप में **डॉ. अनिल दत्त मिश्र**(गांधीवादी लेखक), **श्री अनुराग चतुर्वेदी**(वरिष्ठ पत्रकार) और **डॉ. विनोद मल्ल** (महानिदेशक,गुजरात पुलिस) ने अपना वक्तव्य दिया। प्रथम वक्ता डॉ. अनिल दत्त मिश्र ने समाज में गांधी जी द्वारा किए गए बदलावों की चर्चा की, जिसमें उन्होंने खासकर हरिजनों और दलितोद्धार की बात की । आगे, गांधी की प्रासंगिकता को सबसे महत्त्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा कि गांधी ने समस्या के समाधान हेतु हमेशा विकल्प दिया । उन्होंने आश्रम बनाए, उन्होंने कंस्ट्रकटिव प्रोग्राम किए । आज भी हमें यूथ के सामने नए-नए विकल्प देने पड़ेंगे और यदि हम विकल्प नहीं देंगे तो मेरी समझ से गांधी की बात करना सिर्फ सैद्धांतिक ही रह जाएगा, व्यावहारिक नहीं।दूसरे वक्ता डॉ. अनुराग चतुर्वेदी जी ने पत्रकारिता पर अपनी बात रखी तथा वर्तमान में पत्रकारिता के क्षेत्र में खासकर 'फेक न्यूज़' के बढ़ते प्रचलन को लेकर चिंता व्यक्त की और कहा कि गांधी जी के पत्रकारिता से हमें प्रेरणा लेने की जरूरत है । साथ ही उन्होंने सांप्रदायिक सौहार्द्र हेतु गांधी जी के विचरों को उद्धृत किया । तीसरे वक्ता डॉ. विनोद मल्ल ने महापुरुषों (बुद्ध, महावीर, कबीर, अम्बेडकर, राजा राममोहन राय ....आदि) द्वारा किए गए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय और बराबरी की बात करते हुए गांधी जी के सामाजिक दायित्व बोध को विशेषकर रेखांकित किया और गांधी से जुड़े फिल्म के अंश को भी दिखाकर उस पर चर्चा की । साथ ही अपने प्रशासनिक जीवन से जुड़े अनुभवों को भी साझा किया ।सत्र के अंत में प्रो. मनोज कुमार ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया तथा उन्होंने समस्या के समाधान हेतु मध्यम मार्ग यानी समझौते की महत्ता को बताया । उन्होंने कहा कि गांधी के सम्पूर्ण सत्याग्रह आंदोलन में समझौते की भरमार है और समझौता करना पड़ता है । दरअसल, हम समझौता मूल्यों के साथ करते हैं या परिस्थितियों के साथ या फिर सन्दर्भों के साथ, यह देखने की जरूरत है । सत्र का संचालन गु.के.वि.वि. के शोधार्थी **पुष्पराज सिंह** एवं आभार विद्यार्थी **रूचि दुबे** ने माना।

दूसरे दिन के तीन सामानांतर सत्रों में कुल 45 शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने प्रपत्र प्रस्तुत किए। सामानांतर सत्रों की **अध्यक्षताडॉ. ज़किया फिरदौस, प्रो. अवधेश कुमार, श्री कुमार प्रशांत और डॉ. गजेन्द्र कुमार मीणा** ने की। प्रपत्र प्रस्तुतकर्ताओं में **डॉ. सौरभ ए. ब्रह्म भट्ट, अमिता कुमारी साहू, पी. अंजली, बृजेश प्रसाद, नितीश कुमार, रविन्द्र कुमार मीना, जलपा शाह, सुनील आनंद, पी. वांगचुंग, विकल सिंह, रोशन कुमार झा, आकाश कुमार, सतीश कुमार पाण्डेय, समर विजय, सुनीत मिश्र, सियाराम मीना, प्रकाश पोद्दार, अशोक मौर्य, अनंत कुमार मिश्र, अलोक रंजन, कविता रानी, डॉ. ज्योति डी. लांबा, राहुल प्रसाद, मोहन कुमार, शुभम कुमार, उदय कुमार आजाद, अमितेश कुमार सिंह, हरिओम मीना, मंगलम कुमार रस्तोगी, शिवानंद सिंह, पवन कुमार मिश्र, पुष्पराज सिंह, ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह, सपना दास, प्रदीप कुमार सिंह, अखिलेश कुमार उपाध्याय, प्रिया शर्मा, सुमित कुमार, नीरव पटेल, रामचेत यादव, विजय कुमार मिश्र, ज्योति, पुष्पेन्द्र कुमार, शांति लाल खराड़ी और प्रदीप कुमार मीना** ने अपने प्रपत्र प्रस्तुत किये।

संगोष्ठी के तीसरे दिन, चतुर्थ मुख्य सत्र का विषयथा'हिन्दी साहित्य में गांधी'। इस सत्र अध्यक्षता **श्री रामदेव धुरंधर** (मॉरीशस) ने की तथा वक्ता के रूप में **प्रो. दयाशंकर त्रिपाठी** (सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर) **प्रो. अवधेश कुमार**, (म.गां.अं.हिं.वि.वि.), ने वक्तव्य दिये। प्रथम वक्ता प्रो. दयाशंकर त्रिपाठी ने मुख्यतः गांधी जी की भाषाई चिंतन पर बात रखी और कहा कि गांधी जी मानते

थे कि राष्ट्रहित के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है कि शिक्षा मातृभाषा में दी जाए साथ ही अंग्रेजी भाषा में शिक्षा की बात को वे प्राथमिक दर्ज़े की गुलामी मानते थे । आगे उन्होंने यह भी बताया कि गांधी जी अंग्रेजी के विरोधी नहीं थे बल्कि अंग्रेजी के औचित्यपूर्ण उपयोग के पक्ष में थे। दूसरे वक्ता प्रो. अवधेश कुमार ने हिन्दी काव्य और गांधी जी के संदर्भ में बात करते हुए तीन बातों- पहला, गांधी जी पर लिखी गई कविता, दूसरा गांधी जी के प्रभाव के आलोक में लिखी गई कविता और तीसरा, गांधी जी का प्रभाव उस सम्पूर्ण युग विशेष के सन्दर्भ में, पर अपनी बात को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया । सत्र का संचालन एवं आभार गु.के.वि.वि. के शोधार्थी **सतीश कुमार पाण्डेय** ने माना।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में **प्रो रामदेव शुक्ल** (गोरखपुर विश्वविद्यालय) के साथ मंच पर **प्रो. मनोज कुमार** (म.गां.अं.हिं.वि.वि.), **प्रो. अवधेश कुमार** (म.गां.अं.हिं.वि.वि.), **प्रो. अतनु भट्टाचार्य** (गु.के.वि.वि.) एवं संगोष्ठी के संयोजक **प्रो. संजीव कुमार दुबे** (गु.के.वि.वि.) उपस्थित थे। समापन सत्र के आरंभ में गु.के.वि.वि. के हिन्दी अध्ययन केंद्र के एम.ए. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के द्वारा प्रस्तुत 'गांधी विशेषांक' पत्रिका का विमोचन किया गया। इसके साथ ही कई प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाव भी व्यक्त किया गया, जिसमें उन्होंने संगोष्ठी से जुड़े अपने तीन दोनों के अनुभव के साथ-साथ व्यवस्था पर भी अपने मंतव्य प्रकट किए । समापन सत्र में प्रो. अतनु भट्टाचार्य और प्रो. अवधेश कुमार ने संगोष्टी के तीन दिन तक चलने वाले कार्यक्रम को क्रमबद्ध रूप से याद किया तथा कार्यक्रम की संकल्पना से लेकर उसके मूर्त रूप लेने तक के अनुभवों को भी उन्होंने साझा किया ।मुख्य अतिथि प्रो. रामदेव शुक्ल ने गांधी जी पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गांधी भारतीय समाज और संस्कृति में प्राणवायु की तरह समाए हुए हैं । आगे उन्होंने कहा कि आज सबसे ज्यादा जरूरत गांधी जी से सीखने की है कि भारत क्या है ! सत्र का अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि गांधी से टकराना, गांधी से संवाद करना, लेकिन कभी भी गांधी ऐसी शरीर की हत्या न करना । जब संवाद रुकता है तब संहार होता है ।समापन सत्र का संचालन गु.के.वि.वि. के शोधार्थी **सुनीत मिश्र** ने किया। **प्रो संजीव कुमार दुबे** ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं उपस्थित सुधी साहित्य प्रेमियों का आभार माना। संगोष्ठी के सभी सत्रों में विचारोत्तेजक चर्चाएं हुईं जिसमे वक्ताओं ने श्रोताओं की जिज्ञासाओं का यथोचित समाधान किया। भोजनोपरांत अहमदाबाद और गांधीनगर में महात्मा गांधी की स्मृति से जुड़े स्थानों के दर्शन की व्यवस्था भी आयोजकों द्वारा की गयी थी, जिसका प्रतिभागियों ने लाभ लिया।

ज्ञान शांति मैत्री